अध्याय IV
गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं

परिचय

4.1 अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं (एआईएफआई), गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी) और प्राथमिक व्यापारी (पीडी), भारत में गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्था (एनबीएफआई) क्षेत्र के तीन महत्वपूर्ण घटक हैं जिसका विनियमन और पर्यवेक्षण रिज़र्व बैंक द्वारा किया जाता है। एआईएफआई एक संस्थागत व्यवस्था है जो क्षेत्र-विशेष को दीर्घावधि के लिए वित्त प्रदान करते हैं। एनबीएफसी, प्रमुख रूप से निजी क्षेत्र की संस्थाएं, विविध प्रकार की वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराते हैं जिसमें उपस्कर पट्टेदारी, किराया खरीद, ऋण एवं निवेश शामिल हैं। प्राथमिक व्यापारी प्राथमिक और गौण सरकारी प्रतिभूति बाजार, दोनों, को बढ़ावा देने में (पीडी) महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। एनबीएफआई क्षेत्र के परिचालनात्मक एवं वित्तीय कार्य-निष्पादन को इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं (एआईएफआई)

4.2 वर्तमान में, भारतीय आयात-निर्यात बैंक (एक्जिम बैंक), राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) एवं भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) रिज़र्व बैंक के विनियमन और पर्यवेक्षण के अंतर्गत आने वाले चार एआईएफआई हैं। वे वित्तीय बाजारों में क्रेडिट विस्तार और पुनर्वित्त परिचालन कार्यों के जरिए हितकारी भूमिका अदा करते हैं और औद्योगिक क्षेत्र की दीर्घावधि वित्तीय जरूरतों को पूरा करते हैं।

वित्तीय कार्य-निष्पादन

एआईएफआई के तुलन पत्र

4.3 एआईएफआई के समेकित तुलन पत्र में 2014-15 के दौरान 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो पिछले कुछ वर्षों में हुई दो अंकों की वृद्धि की तुलना में गिरावट दर्शाती है (सारणी 4.1)। 2014-15 के दौरान ऋणों और अग्रिमों में 11.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि जमाराशियों और उधार में क्रमशः 17 और 9.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। एआईएफआई द्वारा, वर्ष के दौरान, अल्पावधि निधि जुटाई गई, वह भी प्रमुख रूप से वाणिज्यिक पत्रों के जरिए, जिसे समावेशक सीमा (अम्ब्रेला लिमिट)[1] के अंतर्गत रखा गया। एक्जिम बैंक और एनएचबी ने संसाधनों को जुटाने के लिए 50 प्रतिशत से कम समावेशक सीमा का उपयोग किया।

सारणी 4.1: एआईएफआई की देयताएं और आस्तियां
(मार्च के अंत में)

(राशि मिलियन ₹ में)

मद	2014	2015	प्रतिशत घट-बढ़
देयताएं			
1. पूंजी	93594 (2.06)	109594 (2.21)	17.1
2. रिज़र्व	520298 (11.45)	566533 (11.44)	8.9
3. बांड और डिबेंचर	1141801 (25.13)	1059890 (21.41)	-7.2
4. जमाराशियां	1865420 (41.05)	2183064 (44.09)	17.0
5. उधार राशि	659456 (14.51)	723318 (14.61)	9.7
6. अन्य देयताएं	263486 (5.80)	308423 (6.23)	17.0
कुल देयताएं और आस्तियां	**4544054**	**4950822**	**9.0**
आस्तियां			
1. नकदी और बैंक में जमा राशि	73364 (1.61)	78213 (1.58)	6.7
2. निवेश	243345 (5.36)	256028 (5.17)	5.2
3. ऋण और अग्रिम	3911090 (86.07)	4352598 (87.92)	11.3
4. भुनाए गए / पुनर्भनाए गए बिल	58385 (1.28)	21067 (0.43)	-64.0
5. स्थिर आस्तियां	6253 (0.14)	6586 (0.13)	5.3
6. अन्य आस्तियां	251617 (5.54)	236330 (4.77)	-6.1

टिप्पणियां: i. आंकड़े चार एफआई से संबंधित हैं, जैसे, एक्जिम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी और सिडबी। एक्जिम बैंक, नाबार्ड और सिडबी के आंकड़े मार्च अंत के हैं, जबकि एनएचबी के आंकड़े जून अंत के हैं।
ii. कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल देयताओं या आस्तियों की तुलना में प्रतिशत को दर्शाते हैं।

स्रोत: क्रमशः मार्च 2014 और 2015 के अंत की एक्जिम बैंक, नाबार्ड और सिडबी की लेखापरीक्षित ऑस्मोस विवरणियां।
क्रमशः जून 2014 और 2015 के अंत की एनएचबी की लेखापरीक्षित ऑस्मोस विवरणियां।

[1] एआईएफआई को कुल 'समावेशक सीमा' (अम्ब्रेला लिमिट) के अन्दर संसाधन जुटाने की अनुमति प्राप्त है, जो, संबंधित एफआई के नवीनतम लेखापरीक्षित तुलन पत्र के अनुसार उसकी निवल स्वाधिकृत निधि (एनओएफ) से संबंधित है। यह समावेशक सीमा पांच लिखतों पर लागू है जैसे, मियादी जमाराशियां, मियादी मुद्रा उधार, जमा प्रमाणपत्रों (सीडी), वाणिज्यिक पत्रों (सीपी) और अंतर-कॉरपोरेट जमाराशियां।

सारणी 4.2: अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाओं के वित्तीय कार्य-निष्पादन

(राशि मिलियन ₹ में)

	2013-14	2014-15	घट-बढ़	
			राशि	प्रतिशत
ए) आय (ए + बी)	**325765**	**350113**	**24348**	**7.5**
ए) ब्याज से आय	308887	333694	24807	8.0
	(94.82)	(95.31)		
बी) गैर ब्याज आय	16878	16419	- 459	- 2.7
	(5.18)	(4.69)		
बी) व्यय (ए + बी)	**236803**	**262646**	**25843**	**10.9**
ए) ब्याज पर व्यय	219322	243332	24010	10.9
	(92.62)	(92.65)		
बी) परिचालन व्यय	17480	19314	1834	10.5
	(7.38)	(7.35)		
जिनमें से वेतन बिल	12257	13624	1367	11.1
सी) लाभ				
परिचालन लाभ (कर पूर्व लाभ)	61330	78339	17009	27.7
निवल लाभ (कर पश्चात लाभ)	41751	52930	11179	26.7

टिप्पणी: (i) कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल आय/ व्यय की तुलना में प्रतिशत को दर्शाते हैं।
(ii) पूर्ण आंकड़ों का पूर्णांकन किया गया।

स्रोत: 1. क्रमशः मार्च 2014 और 2015 के अंत की एक्जिम बैंक, नाबार्ड और सिडबी की लेखापरीक्षित ऑस्मोस विवरणियां।
2. क्रमशः जून 2014 और 2015 के अंत की एनएचबी की लेखापरीक्षित ऑस्मोस विवरणियां।

वित्तीय संकेतक

4.4 एआईएफआई ने 2014-15 के दौरान अल्प वृद्धि दर्ज की जो ब्याज आय में कम वृद्धि और गैर-ब्याज आय में कमी की वजह से थी जबकि भुनाए गए/पुनर्भुनाए गए बिलों से प्राप्त आय में भी भारी कमी आई (सारणी 4.2)। तथापि, एआईएफआई ने लाभप्रदता में बेहतर प्रदर्शन किया क्योंकि वर्ष के दौरान उनके परिचालन लाभ और निवल लाभ दोनों में भारी वृद्धि हुई।

4.5 एआईएफआई ने निर्धारित मानदंड़ से अधिक पूंजी बनाए रखा और वर्ष के दौरान उनकी पूंजी पर्याप्तता स्थिति में तुलनात्मक रूप से सुधार आया (चार्ट 4.1)।

4.6 पूर्ण रूप से, एक्जिम बैंक को छोड़कर, जिनका आस्तियों पर प्रतिलाभ सीमांत रूप से कम था, एफआई को वर्ष के दौरान उनकी आस्तियों से उच्चतर प्रतिलाभ हुआ (चार्ट 4.2)।

चार्ट 4.1: एआईएफआई का जोखिम (भारित) आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात - 31 मार्च की स्थिति

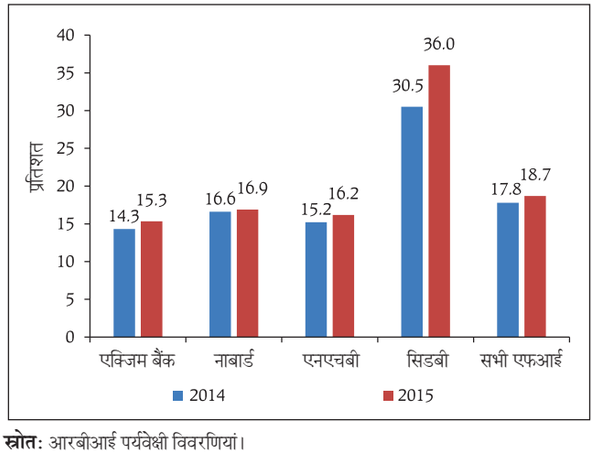

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

चार्ट 4.2: एआईएफआई का आस्तियों पर औसत प्रतिलाभ

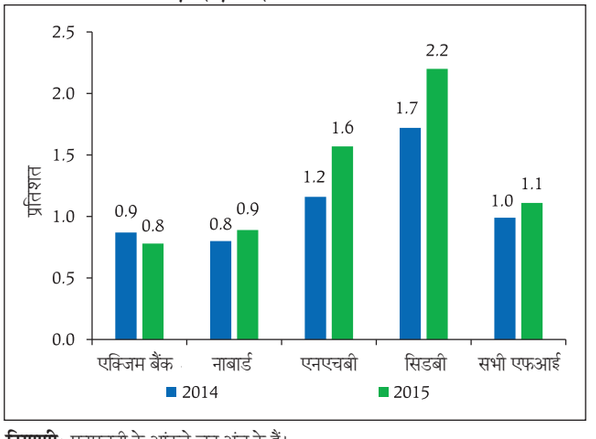

टिप्पणी: एनएचबी के आंकड़े जून अंत के हैं।
स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

4.7 एफआई की आस्ति गुणवत्ता में सीमांत रूप से गिरावट आई और ऋणों की तुलना में निवल एनपीए का प्रतिशत 2013-14 के 0.19 प्रतिशत से बढ़कर 2014-15 में 0.26 प्रतिशत हो गया (चार्ट 4.3)। फिर भी, इन चार एफआई की दबावग्रस्त आस्ति स्थिति, वाणिज्य बैंकों और अन्य एनबीएफसी की तुलना में बेहतर रही।

चार्ट 4.3: एआईएफआई के निवल एनपीए/निवल ऋण - 31 मार्च की स्थिति

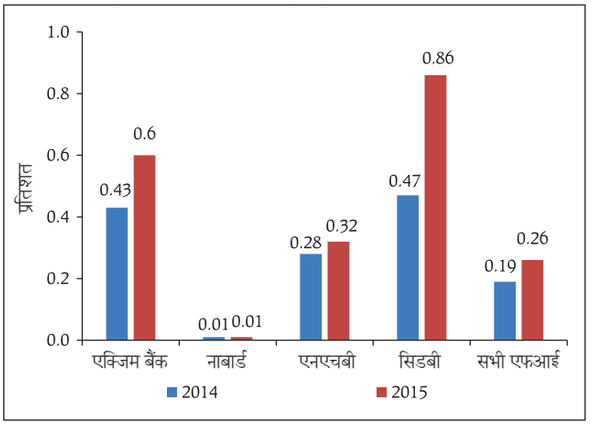

टिप्पणी: एनएचबी के आंकड़े जून अंत के हैं।
स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी)

4.8 एनबीएफसी को उनकी देयता संरचना के आधार पर दो व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है: (क) जमाराशि स्वीकार करने वाले एनबीएफसी, और (ख) जमाराशि न स्वीकार करने वाले एनबीएफसी। 31 मार्च 2015 की स्थिति के अनुसार, 11,842 एनबीएफसी रिज़र्व बैंक द्वारा पंजीकृत थे; जिनमें से 220 जमाराशि स्वीकार करने वाली (एनबीएफसी-डी) और 11,622 जमाराशि न स्वीकार करने वाली (एनबीएफसी-एनडी) संस्थाएं थीं। दो मौजूदा अवशिष्ट गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (आरएनबीसी)[2] अपने कारोबारों को समाप्त करने की प्रक्रिया में हैं।

4.9 भारतीय वित्तीय प्रणाली में एनबीएफसी क्षेत्र की भूमिका, आकार, विस्तार और परिचालन के आला क्षेत्रों के संदर्भ में महत्वपूर्ण बन गई है। अनेक बड़े एनबीएफसी ने विशाल रूप ले लिया है एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं के साथ ज्यादा जुड़ गए हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र के विनियामक ढांचे की समय-समय पर समीक्षा आवश्यक बन पड़ी है। वर्ष के दौरान, रिज़र्व बैंक ने विनियामकीय कमियों, अंतरपणन एवं एनबीएफसी से जुड़े जोखिमों का समाधान करने की दृष्टि से कई उपाय किए ताकि एनबीएफसी के विनियमन और पर्यवेक्षण को सुदृढ़ किया जा सके तथा उनके विनियमनों को बैंकों के साथ चरणबद्ध रूप से जोड़ा जा सके और साथ ही वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा दिया जा सके।

जमाराशि स्वीकार करने वाले एनबीएफसी (एनबीएफसी-डी)

4.10 रिज़र्व बैंक, नीति विचार-विमर्श के हिस्से के रूप में, जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा के साथ-साथ वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देने की दृष्टि से एनबीएफसी को जमाराशि संग्रहण गतिविधियों से दूर करने की कोशिश में लगा हुआ है। एनबीएफसी-डी के विनियमों को सुदृढ़ किया गया ताकि केवल मजबूत और अच्छी तरह से कार्य करने वाले कारोबार बने रह सकें।

वित्तीय निष्पादन

जमाराशि स्वीकार करने वाले एनबीएफसी के तुलन पत्र

4.11 एनबीएफसी-डी के तुलन पत्र में वर्ष के दौरान 2.1 प्रतिशत का विस्तार हुआ (सारणी 4.3)। ऋणों और अग्रिमों, जो उनकी

सारणी 4.3: एनबीएफसी-डी का समेकित तुलन पत्र - 31 मार्च की स्थिति

(राशि बिलियन ₹ में)

मदें	2014	2015 P	प्रतिशत घट-बढ़
1. शेयर पूंजी	33	32	-0.7
2. रिज़र्व और अधिशेष	274	276	0.9
3. जनता की जमाराशि	260	275	5.8
4. डिबेंचर	417	408	-2.1
5. बैंक से उधार	520	551	5.8
6. एफआई से उधार	16	16	2.6
7. अंतर-कॉरपोरेट उधार	1	2	32.7
8. वाणिज्यिक पत्र	93	78	-16.6
9. सरकार से उधार	38	38	-1.0
10. गौण ऋण	79	78	-2.2
11. अन्य उधार	153	170	11.1
कुल देयताएं/आस्तियां	**1885**	**1925**	**2.1**
1. ऋण और अग्रिम	1585	1601	1.0
2. किराया खरीद और पट्टेदारी आस्तियां	46	39	-14.8
3. निवेश	58	77	32.8
4. अन्य आस्तियां	195	205	5.1

अ: अनंतिम।
टिप्पणी: पूर्ण आंकड़ों का पूर्णांकन किया गया। प्रतिशत घट-बढ़ सटीक संख्याओं पर आधारित है।
स्रोत: एनबीएफसी-डी की त्रैमासिक विवरणी।

[2] आरएनबीसी जो अपने कारोबार को समाप्त करने की प्रक्रिया में है, वे हैं पियरलेस जनरल फाइनेन्स एंड इन्वेस्टमेंट लि. और सहारा इंडिया फाइनेन्शियल कॉरपोरेशन लि. (एसआईएफसीएल)।

आस्तियों का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा है, में मामूली वृद्धि हुई जबकि एनबीएफसी-डी की निवेश गतिविधियों में वर्ष के दौरान तेजी से वद्धि हुई। देयता पक्ष में, मुख्यतः जनता की जमाराशियों और बैंक उधार राशियों के संदर्भ में विस्तार हुआ। बैंकों से उधार अभी भी एनबीएफसी-डी के निधीयन का सबसे बड़ा स्रोत बना रहा। डिबेंचरों के माध्यम से निधि संग्रहण में वर्ष के दौरान गिरावट आई, जो निधीयन के स्रोत का दूसरा बड़ा स्रोत है। वर्ष के दौरान वाणिज्यिक पत्रों के जरिए लिए गए उधार में भी भारी गिरावट आई।

वित्तीय संकेतक

4.12 लाभप्रदता वृद्धि में, गत वर्ष की तुलना में, 2014-15 के दौरान कमी आई जो अन्य बातों के साथ-साथ ब्याज भुगतान बोझ के बढ़ने और उच्चतर परिचालन व्यय के कारण हो सकती है (चार्ट 4.4)।

एनबीएफसी-डी की आस्ति गुणवत्ता

4.13 2014-15 के दौरान सकल और निवल एनपीए दोनों के बढ़ने के कारण एनबीएफसी-डी की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट आई (चार्ट 4.5)। श्रेणी-वार देखें तो, ऋण कंपनियों (एलसी) की तुलना में आस्ति वित्त कंपनियों (एएफसी) में गिरावट अधिक थी।[3]

जमाराशि न लेने वाले प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी (एनबीएफसी-एनडी-एसआई)

वित्तीय कार्य-निष्पादन

4.14 एक बिलियन रुपए या उससे अधिक आस्ति आकार वाले जमाराशि न लेने वाले एनबीएफसी को नवंबर 2014 तक प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी (एनबीएफसी-एनडी-एसआई) के रूप में वगीकृत किया गया था। तब से, एनबीएफसी-एनडी-एसआई[4] को वर्गीकृत करने के लिए आस्ति आकार में उर्ध्वमुखी संशोधन किया गया, जो अब 5 बिलियन रुपए हो गया है और 2014-15 के दौरान, एनबीएफसी-एनडी-एसआई के तुलन पत्र में आस्ति पक्ष में ऋणों और अग्रिमों के संवितरण में उल्लेखनीय वृद्धि एवं देयता पक्ष में उधार राशि में तेजी से वृद्धि की बदौलत काफी विस्तार हुआ (सारणी 4.4)।

चार्ट 4.4: एनबीएफसी-डी के चुनिंदा वित्तीय मानक - 31 मार्च की स्थिति

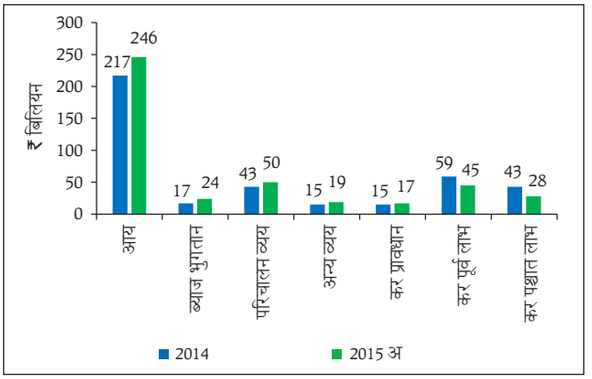

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

चार्ट 4.5: एनबीएफसी-डी के सकल एनपीए और निवल एनपीए

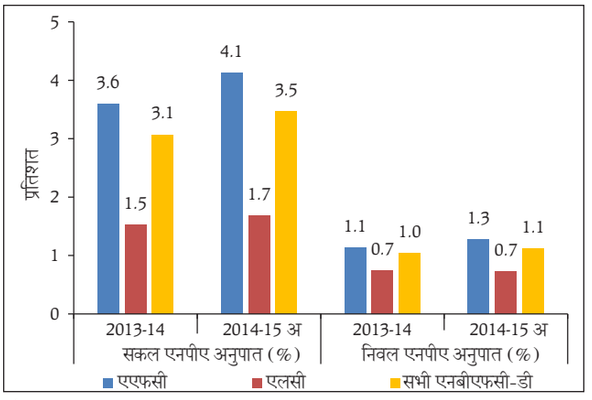

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

सारणी 4.4: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का समेकित तुलन पत्र - 31 मार्च की स्थिति

(राशि बिलियन ₹ में)

मदें	2014	2015 अ	घट-बढ़ (प्रतिशत)
1	2	3	4
1. शेयर पूंजी	638	685	7.4
2. रिज़र्व और अधिशेष	2311	2613	13.1
3. कुल उधारराशि	8669	10177	17.4
4. चालू देयताएं और प्रावधान	608	691	13.6
कुल देयताएं/कुल आस्तियां	**12226**	**14166**	**15.9**
1. ऋण और अग्रिम	8273	9555	15.5
2. किराया खरीद आस्तियां	895	985	10.1
3. निवेश	1888	2267	20.1
4. अन्य आस्तियां	1170	1359	16.2

अः अनंतिम।
टिप्पणी: इसमें 418 संस्थाओं के आंकड़े प्रस्तुत हैं, जिन्होंने क्रमशः मार्च 2014 और 2015 के अंत के आंकड़े लगातार रिपोर्ट किए हैं और जो एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र की कुल आस्तियों के 95 प्रतिशत से अधिक हैं।
स्रोत: एनबीएफसी-एनडी-एसआई की मासिक विवरणी (रुपए 1 बिलियन और अधिक)।

[3] आस्ति वित्त कंपनी (एएफसी): एएफसी गैर-बैंक वित्तीय कंपनी है, जिसका प्रमुख कारोबार भौतिक आस्तियों को वित्त प्रदान करना है। ऋण कंपनी (एलसी): एलसी गैर-बैंक वित्तीय कंपनी है, जिसका प्रमुख कारोबार अपने कार्यकलापों के सिवाय किसी दूसरे कार्यकलापों के लिए ऋण एवं अग्रिम प्रदान करना है, किंतु इसमें एएफसी शामिल नहीं है।

[4] तथापि, तुलना की दृष्टि से, वर्तमान विश्लेषण में, एनबीएफसी-एनडी-एसआई की पुरानी परिभाषा को लिया गया है।

4.15 एनबीएफसी-एनडी-एसआई द्वारा प्रदत्त ऋणों और अग्रिमों ने 2014-15 के दौरान 15.5 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की जबकि समान अवधि में वाणिज्य बैंकों के गैर-खाद्य ऋण में मंदी आई (चार्ट 4.6)। एनबीएफसी-अवसंरचना वित्त कंपनियों (एनबीएफसी-आईएफसी), सूक्ष्मवित्त कंपनियों और ऋण कंपनियों द्वारा प्रदत्त ऋण में दृढ़ वृद्धि की बदौलत एनबीएफसी-एनडी-एसआई के ऋण पोर्टफोलियो में मजबूत वृद्धि हुई।

4.16 2014-15 के दौरान, एनबीएफसी-एनडी-एसआई द्वारा डिबेंचरों और वाणिज्यिक पत्रों के जरिए पूंजी जुटाई गई। बैंक से लिए गए उधार, जो पहले निधीयन का प्रमुख स्रोत हुआ करता था, में उत्तरोत्तर रूप से गिरावट आई। वित्तीय लिखतों में, प्रमुख रूप से एनबीएफसी-आईएफसी, एलसी एवं एनबीएफसी-सूक्ष्म वित्त संस्था (एनबीएफसी-एमएफआई) द्वारा जारी लिखतों में म्यूच्युअल फंड्स का बढ़ता निवेश ध्यान देने योग्य बात है।

वित्तीय संकेतक

4.17 एनबीएफसी-एनडी-एसआई की लाभप्रदता में मार्च 2015 के अंत में काफी सुधार आया (चार्ट 4.7)। कुल आय की तुलना में निवल लाभ का अनुपात दो-अंकों में रहा और गत वर्ष के स्तर से अधिक था।

4.18 फिर भी, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट जारी रही और एनपीए अनुपात गत वर्ष की तुलना में सीमांत रूप से बढ़ा (चार्ट 4.8)। मार्च के अंत में, एनबीएफसी-एनडी-एसआई में से एलसी का एनपीए सर्वाधिक था और उसके बाद आईएफसी एवं एएफसी का एनपीए अधिक था। एनबीएफसी-एमएफआई की आस्ति गुणवत्ता में कतिपय सुधार देखा गया, फिर भी वह उच्च स्तर पर रहा।

चार्ट 4.6: बैंक और एनबीएफसी द्वारा प्रदत्त ऋण में तुलनात्मक वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

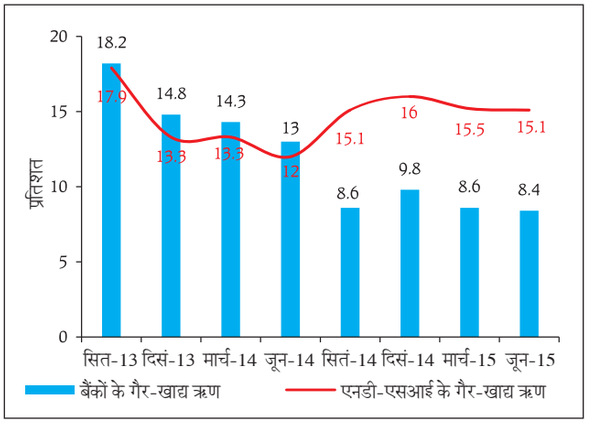

टिप्पणी: आंकड़े 1 बिलियन रुपए और उससे अधिक आस्ति आकार के एनबीएफसी-एनडी-एसआई से संबंधित हैं।
स्रोत: आरबीआई

चार्ट 4.7: एनबीएफसी-एनडी-एसआई के वित्तीय कार्य-निष्पादन - 31 मार्च की स्थिति

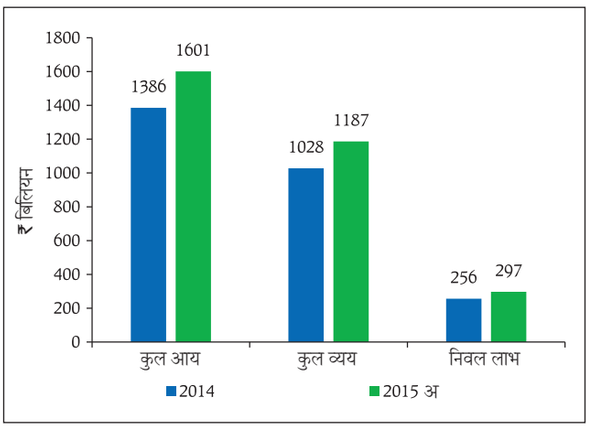

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

चार्ट 4.8: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का एनपीए अनुपात - 31 मार्च की स्थिति

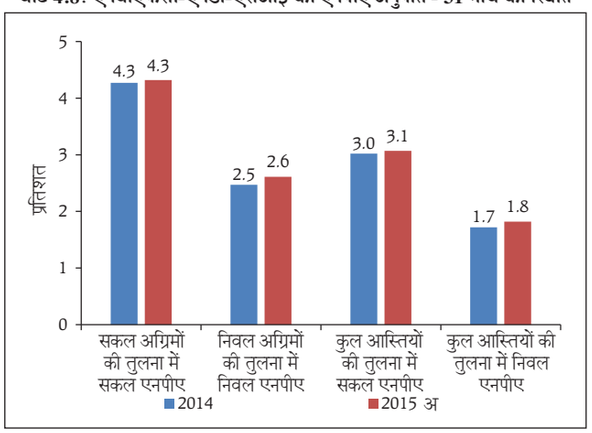

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

4.19 एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र के एनपीए, मुख्य रूप से अवसंरचना क्षेत्र, परिवहन परिचालक खंड, एवं मध्यम और बड़े पैमाने वाले उद्योगों में अधिक थे। तथापि, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी के पास भरपूर पूंजी बनी रही। इन संस्थाओं का पूंजी पर्याप्तता अनुपात 15 प्रतिशत के अधिदेशात्मक स्तर से बहुत अधिक रहा।

प्राथमिक विक्रेता (पीडी)

4.20 31 मार्च 2015 की स्थिति के अनुसार, भारत के वित्तीय बाजार में 20 प्राथमिक विक्रेता (पीडी) कारोबार कर रहे थे। इनमें से, 13 बैंक के पीडी थे जबकि सात एकल पीडी थे। सभी पीडी की सफलता का अनुपात (प्रतिबद्ध बोलियों की तुलना में स्वीकृत बोलियां) गत वर्ष की तुलना में अधिक था और यह 2014-15 के दौरान 40 प्रतिशत के अधिदेशात्मक अनुपात से बहुत अधिक था। दिनांकित प्रतिभूतियों की नीलामियों में, पीडी का हिस्सा (जारी प्रतिभूतियों की तुलना में स्वीकृत बोलियां) 2014-15 के दौरान सीमांत रूप से बढ़कर 51.8 प्रतिशत हो गया। वर्ष के दौरान न्यागमन दबाव तुलनात्मक रूप से कम रहा। 2014-15 के दौरान, पीडी का 52.7 बिलियन रुपए के लिए दो अवस्थाओं में आंशिक न्यागमन हुआ जबकि 2013-14 में 174.5 बिलियन रुपए के लिए 12 अवस्थाओं में आंशिक न्यागमन हुआ।

एकल (नेटवर्क रहित) प्राथमिक विक्रेताओं के वित्तीय कार्य-निष्पादन

4.21 सभी सात एकल पीडी ने 2014-15 के दौरान लाभ दर्ज किया। वर्ष के दौरान आय पर प्रतिफल में सहजता आने के कारण लाभप्रदता में वृद्धि हुई (चार्ट 4.9)।

4.22 वर्ष के दौरान एकल पीडी के पास जोखिम-भारित आस्तियां अधिक थीं (चार्ट 4.10)। वर्ष के दौरान पीडी की पूंजी पर्याप्तता स्थिति मार्च 2014 के अंत के 48.7 प्रतिशत से घटकर 39.6 प्रतिशत रह गई। तथापि, उनकी पूंजी पर्याप्तता स्थिति 15 प्रतिशत के विनियामकीय पूर्वापेक्षा से कई अधिक थी। इस अवधि के दौरान पीडी अपने सभी प्राथमिक और गौण बाजार विनियामकीय अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम थे।

संपूर्ण मूल्यांकन

4.23 एनबीएफसी क्षेत्र की गतिकी, विशेषज्ञता प्राप्त सेवाओं के आला क्षेत्रों में उसकी विकासशील भूमिका को प्रतिबिंबित करती

चार्ट 4.9: एकल (नेटवर्क रहित) पीडी के वित्तीय कार्य-निष्पादन

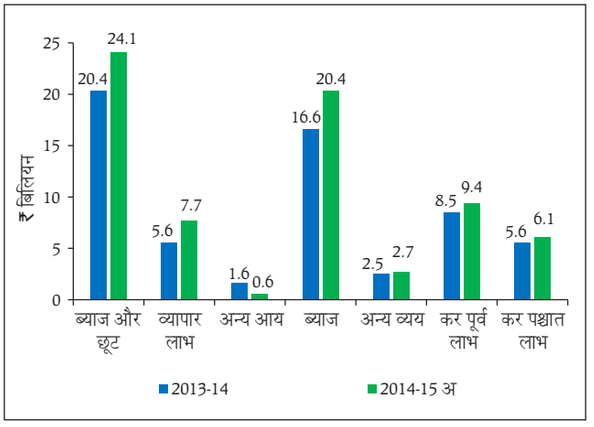

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

चार्ट 4.10: एकल (नेटवर्क रहित) पीडी की पूंजी और जोखिम भारित आस्ति स्थिति - 31 मार्च की स्थिति

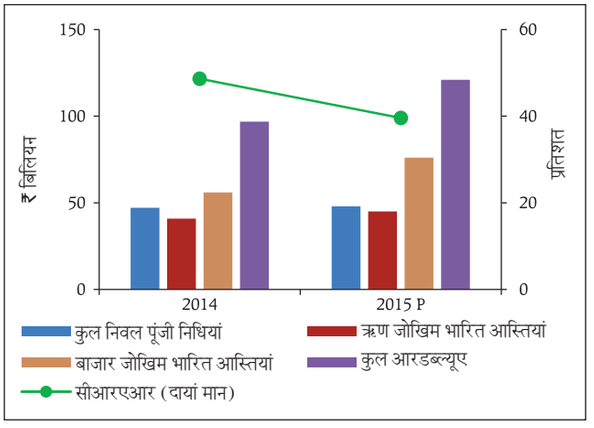

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां।

है। परिचालनगत रूप से, यह क्षेत्र पूंजी पर्याप्तता एवं लाभप्रदता के संदर्भ में वाणिज्यिक बैंकों की तुलना में मजबूत रहा। एनबीएफसी क्षेत्र में कतिपय समेकन भी पाया गया और साथ ही कुछ बड़े आकार के एनबीएफसी और वृहद हुए तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं, जिसका वित्तीय स्थिरता निहितार्थ है, के साथ अच्छी तरह से जुड़े रहे। समग्र एनबीएफआई क्षेत्र की आस्ति गुणवत्ता में भी हाल के वर्षों में गिरावट आई।

4.24 अशोध्य ऋणों की वसूली के मामले से निपटने के लिए यह प्रस्ताव किया गया है कि 5 बिलियन रुपए एवं उससे अधिक आस्ति आकार वाले बड़े एनबीएफसी को सरफेसी अधिनियम, 2002[5] के दायरे में लाया जाए। विनियामकीय कमियों, वाणिज्य बैंकों की तुलना में एनबीएफसी के विनियमन में अंतर के कारण अन्तर-पणन तथा एनबीएफसी से जुड़े जोखिमों का समाधान करने के लिए रिज़र्व बैंक ने विनियामकीय रूपरेखा में संशोधन किया है। नवंबर 2014 में लागू की गई संशोधित विनियामकीय रूपरेखा का उद्देश्य है एनबीएफसी के विनियमों में कमियों का समाधान करना तथा उसके विनियमन को वाणिज्यिक बैंकों के विनियमन के अनुरूप करना। कतिपय महत्वपूर्ण परिवर्तनों में चरणबद्ध रूप से अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित को शामिल किया गया है, एनबीएफसी की निवल स्वाधिकृत निधियों (एनओएफ) को बढ़ाकर मार्च 2016 तक 10 मिलियन रुपए तथा मार्च 2017 तक 20 मिलियन रुपए करना, जनता की जमाराशि स्वीकार करने के लिए पात्र बनने हेतु सभी अनरेटड जमाराशि लेने वाली आस्ति वित्त कंपनियों के लिए 31 मार्च 2016 तक रेटिंग आवश्यकता, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण कहलाने के लिए सभी एनबीएफसी-एनडी के लिए 5 बिलियन रुपए की अधिकतम सीमा निर्धारित करना, एवं बैंकों के अनुरूप एनबीएफसी-एनडी-एसआई तथा एनबीएफसी-डी के लिए आस्ति वर्गीकरण मानदंडों में एकरूपता लाना। एनबीएफसी के विनियमन को समय के साथ-साथ गतिविधि-आधारित विनियमन में परिणत करने की दृष्टि से कम जोखिम पृष्ठभूमि वाले एनबीएफसी को सहजता से विनियमित करना सुनिश्चित करते हुए समग्र विनियामकीय रूपरेखा में संशोधन किया गया था।

4.25 इस तरह के हस्तक्षेपों के बावजूद, कई लघु संस्थाओं, संगठित एवं असंगठित, जो विनियामकीय निगरानी के बाहर छाया बैंकिंग संस्थाओं के रूप में कार्य करती हैं, की ऋण मध्यस्थीकरण गतिविधियों को विनियामकीय अधिकार-क्षेत्र के दायरे में लाना चुनौती बनी हुई है। रिज़र्व बैंक समय-समय पर अपने आउटरीच, सेनसिटाइजेशन कार्यक्रमों तथा लोक सूचनाओं के जरिए जनता को इस प्रकार की संस्थाओं का शिकार होने से बचने के लिए सेनसिटाइज कर रहा है। अपराधी एवं अनधिकृत संस्थाओं से निपटने के लिए, मई 2014 में राज्य स्तरीय समन्वय समिति (एसएलसीसी) का पुनर्गठन किया गया था जिसमें सक्रिय राज्य स्तरीय हस्तक्षेप के जरिए बाजार बुद्धिमता को नियमित रूप से साझा करना एवं प्रभावकारी समन्वित यथासमय कार्रवाई को सरल बनाना शामिल था।

[5] वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्रचना एवं प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002.